शिक्षा दर्शन

दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है-**अगस्त काम्टे**

दर्शन का अर्थ

दर्शन शब्द संस्कृत के दृश्य धातु में लयूट प्रत्यय लगाकर बनाया गया है। जिसका अर्थ है देखना। इसका अंग्रेजी शब्द philosophy जिसकी उत्पत्ति दो यूनानी शब्दों से हुई है।Philos जिसका अर्थ है love और Sophia जिसका अर्थ हैof wisdom इस प्रकार philosophy का अर्थ हैlove of wisdom.

भारतीय दर्शन के प्रकार

कुछ लोग भारतीय दर्शन को हिंदू दर्शन का आस्तिक , नास्तिक पर्यायवाची समझते हैं किंतु या मत ठीक नहीं है। भारत भूमि में उत्पन्न होने वाले जितने भी दार्शनिक संप्रदाय हैं चाहे वह आस्तिक हो अथवा नास्तिक, वेद में आस्था रखने वाले हो अथवा का अवैदिक हो, सभी का समावेश भारतीय दर्शन के अंतर्गत किया जाता है।प्राचीन वर्गीकरण के अनुसार भारतीय दर्शन के आस्तिक और नास्तिक दो भेद किए जाते थे आस्तिक का अर्थ है वेद में आस्था रखने वाले तथा नास्तिक के अंतर्गत उन सभी दर्शनों की गणना की जाती है जो किसी ना किसी प्रकार वेद का विरोध करते हो।

भारतीय दर्शन की विशेषताएं

1-आध्यात्मिक प्रवृत्ति

2-दर्शन, धर्म तथा नीति का समन्वय

3-दुख अनुभूति से दर्शन की उत्पत्ति

4-जगत की नैतिक व्यवस्था और कर्म वाद

5-अज्ञान बंधन है

6-परम पद की प्राप्ति में योग की आवश्यकता

7-मोक्ष अथवा दुख निवृत्ति जीवन का लक्ष्य

शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा

विवेकानंद के अनुसार-मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।

शंकराचार्य-शिक्षा मुक्ति के लिए है।

बी.एन झा के अनुसार-शिक्षा एक प्रक्रिया है और एक सामाजिक कार्य है जो कोई समाज अपने हित के लिए करता है।

शिक्षा दर्शन का अर्थ-

शिक्षा दर्शन का अर्थ स्पष्ट करते हुए **टी.पी.नन** लिखा है शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है जिसके द्वारा वहां यथाशक्ति मानव जीवन का मौलिक योगदान कर सकें।

टैगोर के अनुसार-सर्वोत्तम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन व समग्र दृष्टि के मध्य संतुलन स्थापित करती है।

शिक्षा का स्वरूप

आंग्ल भाषा मैं शिक्षा को एजुकेशन कहा जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के एजुकेटम शब्द से हुई है जो E+Duco से मिलकर बना है जिसका अर्थ है अंदर से बाहर की ओर निकालना।

1-शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

2-शिक्षा की प्रक्रिया किसी समाज में निरंतर चलती रहती है।

3-शिक्षा उद्देश्यपरक प्रक्रिया है।

4-शिक्षा का स्वरूप, समाज के स्वरूप, शासन तंत्र, अर्थ तंत्र और वैज्ञानिक प्रगति आदि पर निर्भर करता है।

शिक्षा दर्शन की प्रकृति-

1-नियामक कार्यप्रणाली

2-परिकल्पनात्मककार्यप्रणाली

3-समीक्षात्मक कार्यप्रणाली

शिक्षा दर्शन की आवश्यकता-

1-शिक्षा के उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए

2-शैक्षिक समस्याओं के समाधान की दृष्टि से आवश्यकता

3-अनुशासन के दृष्टिकोण से आवश्यकता

शिक्षा दर्शन के उद्देश्य-

1-अध्यापक की भूमिका तैयार करना

2-उद्देश्यों में सामंजस्य स्थापित करना

3-संकट के समय देश का पथ प्रदर्शन करना

4-शैक्षिक उद्देश्यों के संबंध में वार्तालाप करना

5-छात्रों को उनकी शिक्षा के उद्देश्यों की ओर उन्मुख करना

6-देश की संस्कृति की सुरक्षा करना

7-शिक्षा के उद्देश्यों में विभिन्नता के कारण

8-शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना

शिक्षा और दर्शन के मध्य संबंध-

1-शैक्षिक सिद्धांत दार्शनिक विचारों के व्यवहारिक प्रयोग

2-दर्शन और शिक्षा एक सिक्के के दो पहलू

3-शिक्षा के उद्देश्यों पर दर्शन का प्रभाव

4-शिक्षा के पाठ्यक्रम प्रदर्शन का प्रभाव

5-शिक्षण विधियों प्रदर्शन का प्रभाव

6-शिक्षक पर दर्शन का प्रभाव

7-पाठ्यक्रम पुस्तकों प्रदर्शन का प्रभाव

8-शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन प्रदर्शन का प्रभाव

9-अनुशासन पर दर्शन का प्रभाव